8699

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

वर्ष : २५ अंक : १२
मार्च २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant

Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office

143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office

2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २५ | अंक - १२, मार्च | २००२

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007 Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —

Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,

for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,

Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

|| जैन भवन ||

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	प्रयात तुम्हें शत-शत प्रणाम	श्रीमती लता बोथरा	५६३
२.	भगवान् महावीर पर मांसाहार के आरोप का प्रतिवाद (खंडन)	नेमीचन्द बांठिया	५६५
३.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	५७५
४.	मलयासुन्दरी		५७७

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दुगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

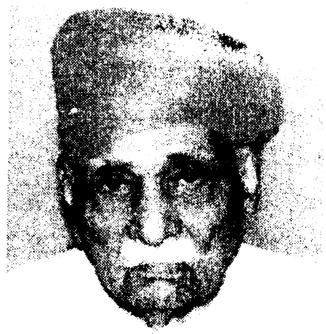

प्रयात तुम्हें शत-शत प्रणाम

एक विलक्षण व्यक्तित्व, ज्ञान दर्शन और चारित्र के साधक, श्रुतज्ञानियों के अभाव की पूर्ति हेतु साहित्य सृजन, शोध और संशोधन में अत्यन्त प्रयत्नशील, आदर्श श्रावक की छवि जिस एक विश्वकोशीय हृदय में चमकती रही उस परिचय का एक ही नाम है भंवरलाल जी नाहटा।

इक्यानवे बसन्तों के उपासक, इक्यानवे पदचिह्न भगवान् महावीर के दर्शन को अर्पित, इक्यानवे साल इस धरती पर वे चले जैन धर्म की स्वर्णिम आभा को फैलाते हुये। जैन दर्शन साहित्य और संस्कृति के अथाह महासागर को लांघते हुये कर्मयोगी नाहटा जी इस महानगर में जैन दर्शन की जीवंत पहचान का दृढ़ स्तम्भ बन गये।

भौतिक तथा आध्यात्मिक सुखो के प्रयास में सामंजस्य बनाये रखने में सफल मानव बिरले ही होते हैं, ऐसा ही विरल व्यक्तित्व था उनका। जो लोग यह समझते है कि सिर्फ डिग्री प्राप्त करने से या शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े लोग ही ज्ञानी है या शास्त्रों पर बोलने का अधिकार रखते हैं, भंवरलाल जी नाहटा की जीवन साधना ने यह साबित कर दिखाया कि शास्त्रों के कोरे ज्ञान से ही कोई पंडित या ज्ञानी नहीं बनता वरन् उसे अपने आचरण में भी उतारना पड़ता है।

वे व्यापार कर्म में लिप्त रहकर भी तन-मन और धन से धर्म चर्या और ज्ञान साधना में सदा आत्मस्थ रहे। आज उनके विषय में लिखते हुए उन दो महान् विभूतियों का स्वरूप सहसा सामने आ रहा है श्री सहजानन्द जी महाराज और श्रीमद् राजचन्द्र जी। इन दोनों भव्य आत्माओं की प्रतीति

उनकी स्मृति में सदा बनी रही। सहजानन्द जी महाराज तो उनके गुरु ही थे। जब कभी भी मुझे उनसे चर्चा करने का अवसर मिलता तो इन दोनों के विषय में नाहटाजी अवश्य बताया करते थे।

जैन धर्म, साहित्य, शोध, पुरातत्व, और इतिहास के क्षेत्र में उनके अवदान का मूल्यांकन इन थोड़े से शब्दों में करना असंभव है। संस्कृत, पाली, प्राकृत, अवधी, बंगला, गुजराती, मराठी, प्राचीन एवं अर्वाचीन हिन्दी आदि भाषाओं में पारंगत, प्राचीन लिपियों को पढ़ने की उनमें अद्‌भुत क्षमता थी। मूर्तिकला, वस्तुकला, चित्रकला और ललित कलाओं के वे पारखी थे।

उनकी मानसिक क्षमता अपरिसीम थी। विद्वत जगत में उनका स्थान सर्वोपरि था। सभी विद्वान उनकी प्रतिभा के कायल थे। हिन्दी साहित्य में भी उनका आदरणीय स्थान हैं। मेरा उनसे परिचय विगत छ : वर्षों से था और इन वर्षों में मुझे उनसे जो प्रेरणा, मार्गदर्शन और स्नेह मिला उसको मैं कभी भी भुला नहीं पाऊँगी। मेरे कार्यों में उनका प्रोत्साहन सदा मिलता था। उनके प्रयाण के दो दिन पूर्व जब उन्होंने अपना आशीर्वाद मुझे दिया तब मैं यह नहीं समझ पायी कि ये मुलाकात अन्तिम हो जायेगी।

आत्मा अविनश्वर हैं। साधक की आत्मा ज्ञानी की आत्मा हमेशा जागृत रहती है और उनकी पुण्यात्मा अपने कार्यों से जीवित रहेगी वर्षों से नहीं, अपने विचारों से जीवित रहेगी श्वासों से नहीं, अनुभूति में जीवित है, समय के गणित में नहीं।

उस सिद्ध सारस्वत बहु आयामी व्यक्तित्व को समर्पित है उन्हीं की प्रेरणा और मार्गदर्शन में लिखा जा रहा शोध ग्रन्थ 'अष्टापद एक यथार्थ' जो शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है।

गंगाजल से ही होती है गंगा की पूजा
रचनाकार की होती है सर्जना से।

(प्रयाण दिनांक ११-०२-२००२। जैन भवन से उनका अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा। उन्होंने इस संस्था के उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष पद को अनेक वर्षों तक सुशोभित किया। जैन भवन की निर्मिति से जुड़े इस व्यक्तित्व का रचनात्मक सहयोग यहाँ से निकलने वाली तीनों शोध पत्रिकाओं को सदैव मिलता रहा। जैन दर्शन के पोषण, रक्षण एवं प्रसार हेतु किये गये उनके कार्यों के लिये ना केवल वर्तमान वरन् आने वाली पीढ़ियाँ भी उनकी चिर ऋणी रहेंगी। निष्ठा, आस्था, विनम्रता व आचरण में सर्वश्रेष्ठ भंवरलाल जी नाहटा को अर्पित है हमारी श्रद्धांजलि।)

भगवान् महावीर पर मांसाहार के आरोप का प्रतिवाद! (खंडन)

नेमीचन्द बांठिया

श्री डी. एन. झा. द्वारा लिखित (Holy cow beef in Indian daitary condition होली काऊ बीफ इन इण्डियन डायटरी कंडिशन्स) पुस्तक में अनेक धर्मों के प्रमुख महापुरुषों का आहार संबंधी जिक्र किया गया है। उसमें आपने भगवती सूत्र का संदर्भ देकर एक दफा अहिंसा के अवतार भगवान् महावीर के मांसाहार करने का भी उल्लेख किया है। आपने जिन पुस्तकों को आधार मान कर भगवान् महावीर के लिए यह जो उल्लेख किया है, इसके लिए आपको भगवती सूत्र के सम्बन्धित स्थल के उन शब्दों में रहे विभिन्न अर्थों, समय, परिस्थिति एवं संदर्भ का अनुसंधान करने के साथ-साथ शब्दों का मूलार्थ, उसके पीछे रहे भाव, किसे, कब तथा किस हेतु को लक्ष्य में रख कर ऐसे शब्दों का वहाँ उपयोग हुआ, उन सब का अध्ययन करने के पश्चात् इस तथ्य को उद्घाटित करना चाहिए था। किसी महापुरुष की भावना, उनके जीवन संदेश और उनके सिखाए आचारों को देख कर कौनसा अर्थ सुसंगत है, वही देना उपयुक्त होता है। बिना इस ओर ध्यान दिये मात्र रूढ़ अर्थ को पकड़ना तथा उसमें छिपे अन्य अर्थों की गहनता का अन्वेषण न करना, स्वयं लेखक की योग्यता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देता है।

जैन मतावलम्बियों के अलावा अन्य सभी मतावलम्बी एक मत से इस बात को स्वीकार करते हैं कि जैन धर्म ***अहिंसा प्रधान*** है। जिस प्रकार अहिंसा के भेद प्रभेद स्वरूप और उसके पालन के लिए जो दिशा निर्देश इस धर्म में दिये गये हैं, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं हैं। इस धर्म में कीड़ी, कुंथुए जैसे छोटे हलते चलते प्राणी की रक्षा का ही नहीं अपितु पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति में भी जीवों की प्ररूपणा करके उनकी रक्षा करने का भी भगवान् महावीर ने उपदेश दिया है। क्या ऐसे अहिंसा परक धर्म के प्रवर्त्तक पर मांसाहार का आक्षेप लगाना, भयंकर भूल के साथ स्वयं की अज्ञानता नहीं

है? व्यक्ति के जीवन को समझे बिना उनके जीवन के साथ विसंगत अर्थ जोड़ देना, उस महापुरुष के साथ ही नहीं अपितु उनके लाखों उपासक वर्ग के साथ भारी अन्याय एवं आक्रोश का कारण बनता है जैसा कि आपने किया है।

भगवान् महावीर के मांसाहार की भ्रांति एवं विसंगत अर्थ का निमित्त भगवती सूत्र शतक १५ के निम्न पाठ को बनाया गया है –

तं गच्छह णं तुमं सीहा ! मेंढियगामं णयरं रेवईए गाहावइणीए गिहे, तत्थ णं रेवईए गाहावइणीए ममं अट्ठाए दुवे कवोयसरीरा उवक्खडिया तेहिं णो अट्ठो, अत्थि से अण्णे पारियासिए मज्झारकडए कुक्कुडमंसए तमाहराहि, एएणं अट्ठो।

मंखली पुत्र गोशालक द्वारा तेजोलेश्या का प्रयोग करने पर भगवान् का शरीर पित्त ज्वर और दाह से आक्रान्त हो गया, तो उनका शिष्य सिंह अनगार शोक करने लगा। उसकी चिन्ता और शोक को समाहित करने के लिए भगवान् ने उससे कहा –

हे सिंह! तू मेंढ़िक ग्राम नगर में रेवती गाथापत्नी के घर जा। उस रेवती गाथापत्नी ने मेरे लिए दो कोहला के फलों को संस्कारित कर तैयार किया है, उनसे मुझे प्रयोजन नहीं है, परन्तु उसके वहाँ मार्जार नामक उदर वायु को शांत करने वाला बिजौरा पाक जो कल तैयार किया हुआ है, उसे लेकर आना। वह मेरे लिए उपयुक्त है।

इस प्रकरण के मूल पाठ में ***दुवे कवोयसरीरा*** तथा ***कुक्कुड-मंसए*** पाठ आया है। जिसका अर्थ है कपोत अर्थात् कबूतर पक्षी के शरीर के वर्ण के समान वर्ण है जिसका, ऐसा फल अर्थात् कुष्मांड-कोहला फल। ***मज्जारकडए कुक्कुडमंसए*** का अर्थ है-मार्जार नामक उदर वायु को शांत करने वाला कुर्कुट मांस अर्थात् बिजौरे का गिर (गूदा) अथवा मार्जार का अर्थ है, विरालिका नामक वनस्पति विशेष, उससे भावित बिजौरे का गिर (गूदा) अर्थात् बिजौरा पाक।

चूंकि उक्त पाठ का संबंध भगवान् महावीर की रोगग्रस्त अवस्था से है अतएव रोग को उपशांत करने हेतु औषधि रूप में रेवती गाथापत्नी के यहाँ सिंह मुनि को भगवान् ने यह कह कर भिजवाया कि रेवती ने आज जो कोहले

के दो फलों को मेरे लिए संस्कारित कर पाक तैयार किया है वह मत लाना। बल्कि कल जो उदरवायु को शांत करने वाला बिजौरा नामक फल को संस्कारित (पाक) कर रखा है, उसे लेकर आना। यहाँ यही अर्थ प्रासंगिक होने से सही एवं प्रामाणिक है।

जो लोग आगम रहस्य एवं भगवान् के पवित्र जीवन से अनभिज्ञ हैं, वे प्रचलित रूढ़ अर्थ के अलावा प्रसंगानुसार (औषधि) वनस्पति परक उन शब्दों के अन्य क्या-क्या अर्थ हो सकते हैं, उनका अनुसंधान किये बिना मांस परक अर्थ कर डालते हैं, जो अनर्थ का हेतु बन जाता है। आपने उक्त पाठ में निम्न शब्दों का औषधि के रूप में वनस्पतिपरक अर्थ न करके उनका मांसपरक अर्थ किया। साथ ही मूल पाठ का एकदम विपरीत और बोगस अर्थ कर डाला, जबकि उक्त पाठ का ऐसा अर्थ होता ही नहीं है। ऐसा अर्थ विद्वान् तो क्या एक सामान्य बुद्धिजीवी व्यक्ति भी नहीं कर सकता।

शब्द	**मांसपरक अर्थ**	**वनस्पतिपरक अर्थ**
१. दुवे कवोयसरीरा	दो कबूतरों का शरीर	कबूतर के शरीर के वर्ण वाला कुष्माण्ड-कोहला फल
२. मज्जारकडए	बिल्ली द्वारा मारे हुए	मर्जार नामक उदर वायु को शांत करने वाला
३. कुक्कुडमंसए	कुकड़े (मुर्गे) का मांस	बिजौरा फल का गिर (गूदा)

आपने इन शब्दों का मांस परक अर्थ करके अपनी उक्त पुस्तक में लिख दिया —

Citing the Bhagavatisutra, you Pointed out that 'Mahaveera once ate a chicken meal to gain strength for a yogic battle with an adversary.' 'His only condition was to ask the woman who cooked the meal to find a chicken already killed by a cat instead of slaughtering a fresh one.'

भावार्थ – भगवती सूत्र का संदर्भ देकर आपने लिखा कि एक बार महावीर ने अपने विरोधी से धर्मयुद्ध (शास्त्रार्थ) हेतु शक्ति प्राप्त करने के लिए

मांसाहार किया। उनकी एक मात्र शर्त थी कि वे उस महिला से जो भोजन बनाती है, उसे पूछ कर पता लगावें कि वह मांस बिल्ली द्वारा पूर्व का मारा हुआ हो, न कि नया मार कर बनाया गया हो।

इस संदर्भ में भगवती सूत्र का मूल पाठ और उसका अर्थ जो हमने ऊपर दिया है, उससे स्पष्ट है कि भगवान् महावीर के शरीर में जो पित्तज्वर एवं दाह का आक्रांत हुआ था, उसको शांत करने के लिए उन्होंने सिंह मुनि को औषधि रूप में बिजौरा पाक लाने के लिए रेवती के यहां भेजा था। **जबकि आपने इसका अर्थ किया है—अपने विरोधी से धर्म युद्ध (शास्त्रार्थ) हेतु शक्ति प्राप्त करने के लिए महावीर ने मांसाहार किया।** जो एकदम विपरीत, गलत, असत्य एवं बोगस है। ऐसा कौन सा भगवती सूत्र है जिसमें आपके द्वारा अनुवादित अर्थ एवं ऐसा मूल पाठ उपलब्ध है? कृपया उसका संदर्भ हमें भिजवाने का कष्ट करें। ऐसा एकदम बोगस अर्थ देने से पहले आपको थोड़ा विचार करना चाहिए था।

भगवान् महावीर राज्य का त्याग करके एकान्त आत्म-साधना के लिए घर से निकले। उन्होंने लोक के समस्त जीवों को, अपनी आत्मा के तुल्य समझ कर उन्हें अपने मन, वचन, काया से किसी प्रकार का कष्ट न हो, इस प्रकार का नियम ले रखा था। साथ ही उनका उद्देश्य उग्र तप करके शरीर को कृश करने का था, वे भला शरीर में शक्ति प्राप्त करने के लिए मांसाहार करे, इसे एक मात्र कल्पित गप के अलावा और क्या कहा जा सकता है? साथ ही उनका लक्ष्य अपनी आत्मा के साथ युद्ध करने का था, न कि किसी व्यक्ति विशेष के साथ । क्या ऐसा उद्घोष एवं आचरण करने वाला महामानव किसी को कभी विरोधी मान कर उसके साथ युद्ध करने का सोच सकता है? उन्होंने अपनी आत्मा के साथ युद्ध करने का स्पष्ट संकेत इस प्रकार किया है-

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ।। २४ ।।

(उत्तरा० अ० ९)

भावार्थ— जो पुरुष दुर्जय संग्राम में दस लाख सुभटों पर विजय प्राप्त करता है और एक महात्मा अपनी आत्मा को जीतता है, इन दोनों में उस महात्मा की यह विजय ही श्रेष्ठ विजय है।

भगवान् महावीर ने उक्त पाठ का स्वयं अक्षरशः पालन किया और अपने धर्मावलंबियों को भी इसका पालन करने का उपदेश दिया।

चूंकि यहाँ प्रसंग भगवान् महावीर के शरीर में पित्त ज्वर और दाह आक्रांत को उपशांत करने के लिए औषधि का था। अतएव आयुर्वेदीय शब्दकोष के अनुसार उन शब्दों के क्या अर्थ होते हैं, उनको ग्रहण करके तदनुसार अर्थ करना ही योग्य था, और है। चिकित्सा के संदर्भ में आयुर्वेद अनुसार प्रयुक्त शब्दों का क्या अर्थ होता है, वह इस प्रकार है। कृपया ध्यान में लें।

कपोत शरीर— संस्कृत शब्दकोश के अनुसार ***कपोत*** कबूतर का वाचक है। आयुर्वेदीय शब्दकोश के अनुसार कपोत का एक पर्यायवाची नाम ***पारावत*** है। पारावत के फल कबूतर के अण्डों के समान होता हैं पारावतपदी आयुर्वेद में काकजंघा को कहते हैं। धन्वन्तरि निघण्टु (प० १८९) में काकजंघा को काकमाची विशेष माना है। काकमाची शब्द मकोय शाक का वाचक है।

साराम्लकः सारफलो रसालश्च पारावतः ।। (३२५)

कपोताण्डोपमफलो, महापारावतोऽपरः ।।

(कैयदेव निघण्टु औषधिवर्ग पृ० ६२)

काकजंघा ध्वंक्षजंघा, काकपादा तु लोमशा।

पारावतपदी दासी, नदीकांता प्रचीबला।।

(धन्वन्तरि निघण्टु ४ / २० पृ० १८६)

वनस्पतिशास्त्र में कपोता, कपोती, कपोतवेगा, कपोतवल्ली जैसे शब्दों का प्रयोग मिलता है–

कपोता, कपोती	-	सर्पाक्ष्यादिगणे रसौषधिविशेषः ।
कपोतवेगा	-	ब्राह्मी
कपोतवल्ली	-	सूक्ष्मैला (द्रव्यगुणकोषः पृ० ३९)

वनस्पतिशास्त्र में पारावतपदी का प्रयोग काकजंघा, ज्योतिष्मती और हंसपदी भेद के लिए हुआ है (द्रव्यगुणकोषः पृ० ११२)। भावप्रकाश निघण्टु के

नामवर्ग में भी इसका प्रयोग ज्योतिष्मती (मालकांगनी) के लिए हुआ है (भावप्रकाशनिघण्टु पृ० ७९९)

उसके अनुसार पारावतपदी काकजंघा-मकोय विषम ज्वर नाशक, कफपित्तशामक, चर्मरोग नाशक है।

काकजंघा हिमा तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ।

निहन्ति ज्वरपित्तास्त्रवणकण्डूविषक्रिमीन् ।।

(भाव प्रकाश निघण्टु पृ० ४४१)

आगम साहित्य में वनस्पति के साथ शरीर शब्द का प्रयोग किया जाता है – **पुढवी सरीरं, आउ सरीरं, तेउ सरीरं, वाउ सरीरं, वणस्सइ सरीरं** (सूयगणो २/३/३६) ।

मार्जार — संस्कृत शब्दकोश के अनुसार ***मर्जार*** बिल्ली का वाचक है। आयुर्वेदीय शब्दकोश के अनुसार ***मार्जार*** चित्रक का वाचक है।

कालो व्यालः कालमूलोऽपि दीप्यो, मार्जारोग्निदाहकः पावकश्च।
चित्रांगोऽयं रक्तचित्रो महांगः, स्यदुदाहश्चित्रकोन्यो गुणाढयः।।

(राज. निघण्टु वर्ग ६/४६/पृ० १४३)

आयुर्वेद में चित्रकमूल का प्रयोग सतत ज्वर में किया जाता है।

कुक्कुट — संस्कृत शब्दकोश के अनुसार ***कुक्कुट*** मुर्गा का वाचक है। आयुर्वेदीय शब्दकोश के अनुसार ***कुक्कुट*** शितिवार (चोपतिया शाक) का वाचक है–

शितिवारः शितिवरः स्वस्तिकः सुनिषण्णकः ।
श्रीवारकः सूचिपत्रः पर्णक कुक्कुटः शिखी ।।

(भाव प्रकाश निघण्टु शाकवर्ग पृ० ६७३, ६७४)

शितिवार का प्रयोग **दीपन और अग्निमांद्य** को दूर करने के लिए किया जाता है। इसका शाक त्रिदोषघ्न और ज्वरनाशक है।

मांस — आयुर्वेदीय ग्रन्थों में छाल के लिए त्वचा और गूदे के लिए मांस शब्द का प्रयोग किया जाता है। अष्टांग संग्रह में भिलावे के गूदे के लिए मांस का प्रयोग किया गया है–

भल्लातकस्य त्वग् मांसं

बृंहणं स्वादु शीतलम् ।। (अष्टांग संग्रह ८/१६८)

आयुर्वेदीय ग्रन्थों में गूदे के लिए मांस शब्द का प्रयोग अपवाद स्वरूप नहीं है। यह एक वनस्पतिशास्त्रीय सामान्य प्रयोग है।

कैयदेव निघण्टु में भी गूदे के लिए मांस शब्द का प्रयोग मिलता है-

उण्णवातकफश्वासकासतृष्णावमिप्रणुत ।

तस्य त्वक् कटु तिक्तोष्णा, गुर्वी स्निग्धा च दुर्जरा ।।

कृमि श्लेष्मानिलहरः मांसं स्वादु हिमं गुरु ।

बृंहणं श्लेष्मलं स्निग्धं पित्तमारुतनाशनम् ।।

(कैयदेव निघण्टु श्लोक २५५, २५६ औषधिवर्ग)

वनस्पति शास्त्र में मांसल फल का मतीरे के अर्थ में प्रयोग हुआ है- **मांसलफलः कालिन्दी।** अनेक शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग प्राणिशास्त्र और वनस्पति शास्त्र-दोनों में समान रूप से हुआ है।

(आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा ***मांसाहार एक समीक्षा***- से साभार उद्धृत)

हाँ, तो झा साहब एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। जिनका प्रयोग प्रसंगानुसार किया जाता है। आपकी जानकारी हेतु शब्दों के कुछ ऐसे उदाहरण यहाँ दे रहा हूँ। जिनके अर्थ वनस्पति परक एवं मांस परक दोनों होते हैं।

शब्द	**अर्थ**	**संदर्भ**
आमिष	मांस, भोजन, पकवान	Sanskrit
मांस	प्राणीजन्य मांस, वनस्पति जन्यगर्भ	English
मत्स्यंडी	मछली के अण्डे, शक्कर	Dictionary by Apte
कपोत	कबूतर, सफेद कद्दू	(सुश्रुतसंहिता पृ० ३३८)
कुक्कुट	मुर्गा, बिजौरा	(वैदिक शब्द सिंधु पृ० १५९)
मज्जार	बिल्ला या बिलाड़, एक प्रकार का वायु	(वैदिक शब्द सिंधु पृ० ८८९)

मत्स्यापिता	मछली का पिता, एक प्रकार की वनस्पति	
मंडूकी	मेढकी, इस नाम की एक वनस्पति	
कुक्कुड	मुर्गा, इस नाम की वनस्पति	वैदक ग्रंथ
कुकड	मुर्गा, अरिष्ट	बृहद निघंटु
मांसफल	मांस का फल, खरबूजा	वैदक ग्रंथ
अंडा	अण्डा, आंवला	वैदक ग्रंथ
अहिफन	सांप का फन, अफीम	बृहदनिघंटु
नागजिह्वा	नाग की जीभ, पणशिल (फल)	बृहदनिघंटु
Flesh-	मांस Fleshy part of a fruit	Eng. Dic.
	फल का मावा (गूदा)	by J. Ogilvee P. 292

एक दफा किसी तथाकथित सिरफरे पंडित ने पूर्व में भी भगवान् महावीर पर उक्त आगम पाठ को लेकर मांसाहार का आक्षेप लगा दिया था, इस संदर्भ में श्री रतिलाल मफाभाई शाह की सर्वोदयी नेता विनोबा जी से बात हुई, उन्होंने जो जवाब दिया वह आपके लिए मननीय है–

ऋषि मांस नहीं खाते थे ऐसा मैं नहीं मानता, परन्तु भगवान् महावीर का जीवन, उनके उपदेश सूक्ष्म अहिंसा का पालन तथा आत्यंतिक सत्य के लिए तनिक भी चलित न होने की उनकी मनोवृत्ति देखते हुए, मैं निःसंदेह मानता हूँ कि भगवान् महावीर कभी मांसाहार कर ही नहीं सकते। मैं पंडितों के साथ चर्चा करना नहीं चाहता, किन्तु उनके जीवन से विसंगत ऐसा अर्थ वे क्यों जोड़ सकते होंगे, यह मेरी बुद्धि में ही नहीं उतरता। मैं मानता हूँ कि यह शाब्दिक खेल का प्रश्न नहीं है, पर हृदय की सूझबूझ का प्रश्न है। यदि भगवान् महावीर में तनिक भी त्रुटि नजर आती, तो विश्वभर में अनन्य ऐसा निरामिषाहारी जैनसंघ स्थापित करने की योग्य शक्ति ही वे न प्राप्त कर सकते।

कुछ देर रुककर पुनः उन्होंने कहा–हास्यास्पद बात तो यह है कि जिस प्रकार भगवान् महावीर के एकाद शब्द का आधार लेकर पंडितों ने उन्हें मुर्गे

का मांस खिलाया है, उसी प्रकार ईसाइयों ने ईसा को टिड्डी खिलाई है। प्रसिद्ध टीकाकार ...... रवरन्ड (नाम मैं भूल गया हूँ) ने बाईबल की अपनी टीका में लिखा है कि ईसा शहद के साथ टिड्डी खाते थे। यह पढ़कर मुझे लगा कि टिड्डी क्या खाने की वस्तु है, जिसे ईसा शहद के साथ खाते होंगे? अतः इस सम्बन्ध में मैं पादरी साहब से मिला, तो उन्होंने बताया, बाईबल में ही जब स्पष्ट उल्लेख है, तब अन्य विकल्प का स्थान ही नहीं रहता। शब्दों को ही पकड़ कर रहने वाले पंडितों को इसके अतिरिक्त अन्य सूझ ही क्या सकता है? किन्तु मुझे इस प्रश्न ने बेचैन बना दिया। मेरा हृदय यह अर्थ स्वीकार करने को इन्कार करता था। अतः मैं प्रसिद्ध विद्वानों के विभिन्न शब्दकोष देखने लगा तो, एक में उस शब्द का अर्थ टिड्डी के अतिरिक्त एक प्रकार का फल (जिसका नाम मैं याद नहीं रख सका हूँ) मिला। उस फल के साथ आज भी शहद लिया जा सकता है।

अतः मैं उन रवरन्ड साहब से पुनः मिला और मैंने फल का अर्थ ही ईसा के साथ अधिक सुसंगत है, यह समझाया। उन्होंने अपनी भूल को स्वीकार करके उस नये अर्थ को मान्य रखा। पर तब तक तो यह भूल चलती ही रही। मतलब कि व्यक्ति के जीवन को समझे बिना उसके जीवन के साथ विसंगत अर्थ जोड़ देना ऐसे पुरुषों को बड़ा भारी अन्याय करने के बराबर है।

जैन मुनि के लिए अनेक विशेषणों का प्रयोग किया गया है, उनमें से एक विशेषण है- **अमज्जमंसासि —** (दशवै० सूत्र चूलिका २) अर्थात् मद्य मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का कदापि सेवन न करने वाला, जो अपने शिष्यों को मद्य मांसादि अभक्ष्य पदार्थों के सेवन के निषेध का विधान करे और स्वयं इसका सेवन करे, क्या यह आश्चर्यजनक बात कभी हो सकती है ? भगवान् महावीर के संत तीन करण, तीन योग से हिंसा के सम्पूर्ण त्यागी होते हैं।

आपके उक्त आरोप के खंडन के लिए वैसे देने को सैकड़ों हेतु एवं प्रमाण हमारे पास हैं, किन्तु उन सब को उद्धृत करने से पुस्तक का रूप बन जायगा, अतएव हमने मुख्य मुख्य संदर्भ आपके विचारार्थ इस पत्र में दे दिये हैं। कृपया इस पर गहनता से चिंतन मनन करें एवं अपनी गलती का अहसास करें।

चूंकि आपके उक्त लेखन से अपने आराध्य भगवान् महावीर के प्रति आस्था रखने वाले लाखों लोगों के चित्त को आघात पहुँचा है। इसके लिए आवश्यक है कि आप बिना किसी शर्त के सार्वजनिक रूप से लिखित में क्षमायाचना करें साथ ही इस पुस्तक में भगवान् महावीर के साथ-साथ अन्य धर्मों के महापुरुषों पर भी जो मांसाहार के आक्षेप लगाये हैं, उन्हें तुरन्त प्रभाव से निकालने का कष्ट करें।

जैन समाज शांतिप्रिय एवं पूर्णतया अहिंसा में विश्वास रखने वाला समाज है। वह नहीं चाहता कि इस **अहिंसा वर्ष** में इस प्रसंग के प्रतिवाद के लिए किसी प्रकार की हिंसात्मक या उत्तेजनात्मक शैली अपनाई जाय?

सही तथ्यों की जानकारी दिलाने पर आपका नैतिक कर्त्तव्य होता है कि आप उक्त पुस्तक को स्वयंमेव वापिस (Withdraw) कर लें एवं अपने इस कृत्य के लिए क्षमा मांगें। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो मजबूरन सम्पूर्ण जैन समाज को इसके लिए उचित कार्यवाही हेतु सोचना होगा। जिसकी समस्त जिम्मेदारी आपकी होगी।

----- ✸ -----

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

जो व्यक्ति अपने आप में योग्यता प्राप्त किये बिना श्रेष्ठ बनने का प्रयत्न करते है वे अहंकारी बन जाते है। स्वयं को श्रेष्ठ बनाने के लिए दूसरों के सामान्य दोषों को बड़ा रूप देकर समाज के सामने रखते है। कोई उनसे आगे न बढ़ जाय इसलिए अन्य की निन्दा करते रहते हैं। पापाचरण करने वाले व्यक्ति स्वयं के पाप को नगण्य बनाने के लिए दूसरे का सामान्य पाप भी बड़ा बनाकर बारंबार चर्चा करते रहते है। स्वयं के दोष को ढकने के लिए कभी कभी निर्दोष व्यक्ति को भी दोषी सिद्ध करने का असफल या सफल प्रयत्न करते है। जब व्यक्ति कोई कार्य में सफल नहीं हो पाता है तब अन्य पर दोषारोप करने स्वयं को चतुर सिद्ध करने का प्रयत्न करते है।

इन सभी दुर्गुणों से बचने के लिए स्वदोषदर्शन और परगुण दर्शन का अभ्यास करना चाहिए।

स्वदोष दर्शन गुण से अनर्थों से बचा जा सकता है। प्रायश्चित किया जा सकता है। परगुण दर्शन से उन व्यक्तियों को अपनी प्रेरणा की मूर्ति बनाया जा सकता है। अगर हम गुण देखने की आदत डाले तो हर व्यक्ति में कहीं न कहीं कुछ न कुछ गुण तो मिल ही जायेगें। आज समाज को सर्वाधिक नुकसान परस्पर निन्दा प्रवृत्ति से हो रहा है। एक दूसरे के दुष्प्रचार के कारण सामान्य जनता किसी को भी विश्वास करने में कतरा रही है। या फिर कोई एक पक्ष में मिलकर वे भी प्रवृत्ति में शामिल हो जाते हैं इस प्रकार की प्रवृत्ति से युवा वर्ग को अधिक हानि हो रही है। युवा वर्ग प्रारंभिक भूमिका से ही स्वयं को अधिक लाभान्वित करने के लिये गलत कार्य की ओर आकर्षित हो जाता है। अच्छे सदव्यक्ति आज इन अनेक कारणों से निवृत्त होकर बैठ गये है। परिणाम स्वरूप सत्ता के शिखर पर आज अयोग्यों की संख्या बढ़ती जा रही है। वर्तमान समय में अच्छे व्यक्ति की संख्या बहुत कम है। इसमें भी अगर

उनकी अपेक्षा होती रही तो समाज रसातल में पहुँच जायेगा। गुणी व्यक्ति को सम्मानित करके समाज के अग्रस्थान में बैठाना चाहिए। इस प्रकार की प्रवृत्ति से अन्य व्यक्तियों को भी इस ओर आने की इच्छा जागेगी।

एक प्राचीन उपमा है — एक संत और एक वैश्या एक ही गली में आमने-सामने मकान में रहते थे। संत महात्मा भक्तों को उपदेश के साथ-साथ सामने रहने वाली वैश्या की बात कहना नहीं भूलते थे। वे वैश्या की निन्दा करते रहते थे। दूसरी ओर वैश्या आये पुरुषों को सामने वाले संत के गुणगान सुनाती और अपनी मजबूरी से दुःखी रहती थी।

एक दिन एक देव विमान वैश्या को लेने के लिए आया। संत आश्चर्य में पड़ गये। पूछने पर पता लगा कि संत ने वैश्या की निन्दा करके अपने जीवन को अपवित्र बना दिया है, जब कि वैश्या ने संत की अनुमोदना करके अपने जीवन को पवित्र बनाया।

निन्दा के कारण ही आज समाज अनेक भागों में विभाजित हो गया है, और हो रहा है।

वर्तमान साधु समाज का मुख्य कर्त्तव्य है कि समाज को इस दुर्दिन से उठाये। साधु की निन्दा न करें।

कुसंग त्याग— सत्संग पतित को पावन बनाता है। और कुसंग संत को पतित।

हम अगर जीवन में धर्म-कर्म व्रत, दान आदि करने में असमर्थ है तो सत्संग तो अवश्य करना चाहिए। सत्संग सभी गुणों का प्रवेश द्वार है।

वर्तमान समय में कुसंग का योग सामान्य हो गया है। युवावस्था में कुसंग के कारण समझदारी आने से पूर्व ही गलत रास्ते पर आगे बढ़ जाते है। जब तक उनमें समझदारी आती है तब बहुत देरी गयी होती है। जहाँ वे पहुँच चुके होते है वहाँ से इच्छा होने पर भी लौट नहीं पाते है।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

पूर्वभव वृत्तान्त

राजन् ! महाबल और मलयासुन्दरी ने पूर्वभव में रुद्रा और भद्रा के साथ जो तीव्र वैर पैदा किया था, उस वैर को याद करती हुई व्यन्तरी ने फिर इस जन्म में भी महाबल को मारने का प्रयत्न किया था, किन्तु इसके पुण्य की प्रबलता से जब वह इसे मारने में सफल मनोरथ न हो सकी तब रात्रि के समय अपने महल में सोते हुए को उपद्रव करने लगी। जो चुराये गये वस्त्र और कुण्डलादि चंद्रावती नगरी के समीप बड़बृक्ष की खोखर में से राजकुमार को मिले थे वे सब उस व्यन्तरी के ही उड़ाये हुए थे, कुमारी मलयासुन्दरी ने महाबल के प्रथम समागम के समय अपने हृदय के समान प्रिय जो लक्ष्मीपुंज हार उसे समर्पण किया था उस हार को भी कुमार के सो जाने पर उसके पास से व्यन्तरी ने ही उड़ा लिया था और पूर्वभव सम्बन्धी गाढ स्नेह होने के कारण उसने उस हार को कनकवती की गोद में डाला था।

पूर्वोक्त अन्तिम बृत्तान्त सुनते ही आश्चर्य से चकित हो राजा वीरधवल नम्रता पूर्वक बोल उठा–भगवन् ! क्या महाबल कुमार स्वयंबर होने से पहले भी कभी मलयासुन्दरी से मिला था ? यह बात तो असंभवितसी मालूम होती है। स्वयंवर के सिवा वह कभी हमारे वहाँ आया ही नहीं था। राजा वीरधवल के ये वचन सुनकर महाबल और मलयासुन्दरी मुखपर वस्त्र डाल कर हँसने लगे। क्योंकि उनके प्रथम मिलन का समाचार उन दोनों के सिवा अन्य किसी को मालूम ही न था। राजा शंका दूर करने के लिए ज्ञानी महात्मा ने तमाम बृत्तान्त विस्तार पूर्वक कह सुनाया कि राजकार्य के लिये आये हुए सूरपाल राजा के सेनापतिमंडल के साथ महाबल कुमार गुप्त वेष में चंद्रावती आया था। संध्या के समय वह प्रथम कनकवती के महल में आया, उसी से रास्ता पूछने पर मलयासुन्दरी से जा मिला था। उस समय प्रथम मिलन में प्रेम बन्धन को दृढ़ करने के लिए मलयासुन्दरी ने लक्ष्मीपुंज हार महाबल के गले में डाल दिया।

पूर्व जन्म के वैर के कारण इस बात को दूसरे रूप में बदला कर कनकवती ने कपट भाव से आपको उलटा सीधा समझाकर मलयासुन्दरी पर आपका विशेष कोप करादिया था इत्यादि कनकवती का भी ज्ञानी गुरुने संक्षेप

से सर्व वृत्तान्त कह सुनाया जिसे सुनकर लोगों के हृदय में उसके प्रति बड़ी घृणा पैदा हुई। ज्ञानी गुरुदेव के वचन सुनकर महाबल और मलयासुन्दरी हाथ जोड़कर बोल उठे—ज्ञान—दिवाकर गुरु—महाराज जो फरमाते हैं वह सर्वथा सत्य है। सर्वज्ञ के ज्ञान में कोई बात छिपी नहीं रहती है। जब व्यन्तरी देवी ने कुमार को उड़ाया और जब वे उस व्यन्तरी के हाथ पर बैठकर आकाश मार्ग से जा रहे थे उस समय महाबल ने उस व्यन्तरी पर जो मुष्ठी प्रहार किया था उससे पीड़ित हो कर वह व्यन्तरी फिर आज तक कुमार के पास नहीं आई उसका बैरभाव वही पर ही पूर्ण हो गया।

पूर्व भव में जिस सुन्दर नामक नौकर को मुनिको दाग देने के लिए जलते हुए पँजावे में से सुन्दरी ने आग लाने को आज्ञा की थी वह सुन्दर नौकर मरकर पृथ्वीस्थानपुर के बाहर बड़बृक्ष पर व्यन्तर होकर रहा था। जब महाबल योगी की प्रेरणा से लोभसार चोर के मुर्दे को लेने उस वट बृक्ष के पास गया तब उस व्यन्तर देव ने ज्ञान बल से महाबल को पहचान लिया और उसने जो प्रिय मित्र के भव में अपनी पत्नी के वचन को बढ़ावा देने के लिए उसे यह कहा था कि इसके पैर बड़की शाखा से बाँध दो जिससे इसके पैरों में कांटे न लगें। इत्यादि बातें स्मरण होने से उसने विचारा कि इसने स्वामित्व के मद में आकर उस समय मेरा तिरस्कार किया था। इस समय मैं भी इसे इसके वचनानुसार कुछ चमत्कार बतलाऊं तो ठीक हो। यह सोचकर उस व्यन्तर ने मुरदे के शरीर में प्रवेश किया और मुरदे के मुख से बोला कि—अरे मूर्ख! मुझे बड़ की शाखा से बँधा देखकर क्यों हँसता है, तू खुद भी आनेवाली रात में इसी बड़की शाखा पर बाँधा जायगा और ऊपर पैर अधो मुख करके लटकाया जायेगा। ठीक उस व्यन्तर देव के कथनानुसार ही दूसरे दिन महाबल उस बड़ बृक्ष की शाखा से लटकाया गया था। पूर्व-जन्म में आक्रोश के वचनों द्वारा जो नौकर को दुःख दिया था, उसी अशुभ कर्म के परिणाम में बड़ की शाखा से बँधना पड़ा।

एक दिन रुद्रा ने लोभ के वश होकर अपने पतिकी अँगूठी चुराली थी। उसे यह काम करते हुए सुन्दर ने देख लिया था। घर में सब जगह ढूँढ़ने पर भी जब वह अँगूठी न मिली तब प्रियमित्र बहुत ही व्याकुल होने लगा। अपने स्वामी को व्याकुल देखकर अपने चोरी का बहम न आवे इस कारण सुन्दरने रुद्रा के समक्षही प्रियमित्र से कहा—स्वामिन्! आप किस लिये व्याकुल होते हैं! आपकी अँगूठी रुद्रा के पास है, आप इनसे माँग लेवें। ये वाक्य सुनकर रुद्रा रोष में आकर बोल उठी अरे! दुष्ट कपटी नकटे सुन्दर! तू झूँठ क्यों

बोलता है? मैंने कब अँगूठी ली है? रुद्रा के तिरस्कार पूर्ण शब्द सुनकर सुन्दर को बड़ा दुःख हुआ। परन्तु पराधीन होने के कारण उसने मौन रहकर रुद्रा के वचन सहनकर लिये । असत्य उत्तर देनेवाली अपनी स्वामिनी को वह और क्या कह सकता था? यह आप अपने किये का फल भोगेगी यह समझकर वह चुप रह गया। प्रियमित्र ने साम दाम आदि नीति से रुद्रा के पास से अपनी अँगूठी निकाल ली और फिर उसकी खूब कदर्थना की। नौकर को असत्य और कटु वचन बोलकर रुद्रा ने रौद्र–भयानक कर्म उपार्जन कर लिया।

पूर्व–भवकी अपनी मालकिन रुद्रा को कनकवती के रूप में देख अपने ऊपर तिरस्कारपूर्ण बोले हुए दुर्वचन याद कर व्यन्तर जाति में पैदा हुए सुन्दर के जीवने चोर के मृतक शरीर में प्रवेश कर कनकवती की नाक काट ली।

मदन का पूर्वजन्म में सुन्दरी पर जो अनुराग था वह प्रबल होने के कारण इस भव में भी मलयासुन्दरी को देखकर मदन के जीव कन्दर्प के हृदय में उस पर आसक्ति हुई। मनुष्य के हृदय में जो पहले भवों के संस्कार के कारण वासनायें पैदा होती हैं वे बिना भोग के या प्रबल ज्ञान की सहायता के सिवा कभी शान्त नहीं होतीं। पहले भव में मलयासुन्दरी और महाबल ने बारह व्रत अंगीकार पूर्वक गृहस्थधर्म की आराधना की थी और मुनि को दान दिया था। उस शुभ कर्म के प्रभाव से इस जन्म में इन्होंने उत्तम कुल में पैदा होकर सुख की सामग्री प्राप्त की है।

मलयासुन्दरी प्रियासुन्दरी के भव में मुनि को आक्रोश पूर्वक तिरस्कार वचन बोलते हुए कहा था कि अरे! पाखंडी मुनि! तेरे सगे सम्बन्धियों से तेरा सदैव वियोग हो, तू राक्षस के समान भयानक मालूम होता है। एवं क्रोधित होकर मुनि पर तीन दफा पत्थरों का प्रहार किया था। महाबल के जीव प्रियमित्र ने भी मौन रहकर अपनी पत्नी के कृत्य की अनुमोदना की थी, उस अकृत्य के द्वारा इन दोनों ने घोर पाप उपार्जन किया था। परन्तु बाद में अपनी भूल मालूम होने से इन्होंने खूब पश्चाताप किया और मुनि के पास जाकर अपने अपराध की क्षमा याचना करते हुए बहुत सा पाप कर्म क्षय कर दिया था। किन्तु क्षय करने पर भी जो दुष्कर्म बाकी रह गया था उसके प्रभाव से इस भव में इन्हें अपने लोगों से तीन दफा संकट पूर्ण वियोग सहना पड़ा है और मलयासुन्दरी को रंगरेज तथा कंदर्प की अधीनता में अनेक प्रहार सहने पड़े हैं। मुनि को राक्षस कहने के कर्म परिणाम में निर्दोष होते हुए भी मलयासुन्दरी को वैर सम्बन्ध से कनकवती की ओर से राक्षसी का कलंक

प्राप्त हुआ। इस प्रकार राजकुल में पैदा होकर भी इन दोनों ने अपने पहले जन्म में किये हुए पापकर्मों के कारण यहाँ पर ऐसे घोर दुःख प्राप्त किये हैं। प्रियसुन्दरी ने कुपित होकर मुनि के हाथ में उनका रजोहरण छीन लिया था। उस रजोहरण को छीनते समय उसके क्लिष्ट अध्यव्यसाय के प्रमाण से वैसे ही विषम फल स्वरूप में बलसार द्वारा पुत्र के छीन लिये जाने पर मलयासुन्दरी को भी अपने निर्वासित जीवन काल में अपने पुत्र का वियोग दुःख सहना पड़ा। जिस मुनि को इन दोनों स्त्री पुरुषों ने उपसर्ग किया था, और बाद में अपनी भूल मालूम होने से जिसके पास उन्होंने पश्चाताप पूर्वक गृहस्थ धर्म अंगीकार किया था वही मुनि इस समय केवल ज्ञानी की अवस्था में विचरते हैं और स्वयं ही वह मुनि हूँ। महाबल और मलयासुन्दरी का यह दूसरा जन्म है परन्तु मैं तो अभी तक उसी भव में विचर रहा हूँ।

ज्ञानी महात्मा—राजन्! कनकवती की ओर से मलयासुन्दरी को नहीं परन्तु महाबल को अवश्य एक दफा भय उपस्थित होगा। वह फिरती हुई यहाँ ही आयेगी। और इसी नगर के बाहर एक दफा महाबल कुमार को भयंकर उपद्रव करेगी और उसी पापकर्म के कारण वह संसार चक्र में पड़ कर नीचादि योनियों में पैदा होकर अनेक प्रकार के घोर दुःख सहन करेगी।

अपने पूर्वभय का बृत्तान्त सुनकर असह्य यातनाओं से बचने के लिये योग्यतानुसार महाबल और मलयासुन्दरी ने गृहस्थधर्म अंगीकार किया, और इस जन्म के दुःखों के कारण भूत पूर्व जन्म में विराधित मुनिपद की आराधना करने का विशेष अभिग्रह धारण किया। इन दोनों के पूर्वभव सम्बन्धित वैराग्य गर्भित चरित्र को सुनकर अनेक मनुष्यों ने वैराग्य प्राप्तकर संयम लेने की उत्सुकता बतलाई। कितने भद्रिक परिणामी मनुष्यों ने गृहस्थ धर्म स्वीकार, किया और बहुत से क्रूर मनुष्यों के हृदय पिघल कर कोमल बन गये। अपने पुत्र और पुत्री का विचित्र और बोध जनक वृत्तान्त सुनकर संसार दुःख से भयभीत हो सूरपाल और वीरधबल राजा चारित्र ग्रहण करने को तैयार हो गये। वे हाथ जोड़कर ज्ञानीगुरु से बोले भगवन्! अपने राज्यभार की व्यवस्था करके हम आपके चरणों में संयम ग्रहण करेंगे। गुरुजी ने कहा—महानुभावों! ऐसे कार्य में विशेष विलम्ब न करना चाहिये।

गुरुमहाराज का वचन स्वीकार कर उन्हें भक्तिभाव से नमस्कार कर दोनों राजा शहर में आये। महाबल वहाँ परही होने के कारण सूरपाल राजा को राज्य की व्यवस्था करने के लिये पृथ्वीस्थानपुर जाने की आवश्यकता न पड़ी। उसने वहाँ पर ही रहकर महाबल को पृथ्वीस्थानपुर का राज्यभार सुपुर्द

कर दिया और संसार से निश्चिन्त होकर दीक्षा लेने को तैयार हो गया। विचारक धर्मार्थी मनुष्य वस्तु के सत्य स्वरूप को समझे बाद उसे ग्रहण करने और असत्य समझने पर परित्याग करने में कदापि विलम्ब नहीं करते।

संयम ग्रहण करने की सूरपाल राजा की अतिउत्सुकता देखकर वीरधवल राजा ने अपने समस्त राज्य सम्बन्धी कार्यभार को उसे सौंप दिया। बस अब शेष करना कुछ न था। दोनों राजाओं ने वहां पर ही अपनी रानियों सहित ज्ञानी गुरुदेव महाराज के पास जाकर संयम ग्रहण कर लिया। गुरु महाराज भी कुछ दिन वहां रहकर उन दोनों राजर्षि शिष्यों को साथ ले अन्यत्र बिहार कर गये। कितने एक समय तक संयम पालकर और दुष्कर तप का आचरण कर अन्त में आराधना पूर्वक काल करके वे दोनों राजर्षि स्वर्ग में गये। वहां से आयु पूर्णकर महाविदेह में जन्म लेकर पुनः संयम द्वारा कर्मक्षय करके मोक्ष प्राप्त करेंगे।

महाबल मलयासुन्दरी को वैराग्य

महाबल राजा ने सागरतिलककी राजधानी पर अपने कुमार शतबल को स्थापित कर दिया, और वहाँ पर अपने प्रधान सेनापति को रखकर एवं शतबल कुमार को साथ ले वह अपनी मुख्य राजधानी पृथ्वीस्थानपुर में आ रहा। वहाँ पर रहकर दुर्जय शत्रुओं पर जय प्राप्त कर निष्कंटक राज्य पालन करने लगा। ज्ञानीगुरुदेव-महाराज के उपदेश से उसके हृदय में सदैव धर्म भावना जागृत रहती है अतः व्यन्तर देवकी सहाय से वह विशेष प्रकार से धर्म और प्रजा की उन्नति करने लगा। जहां पर धार्मिक, साधनों की आवश्यकता मालूम होती वहां पर राज्य की ओर से वे साधन तैयार करवाये गये। अनेक स्थानों पर राज्य की तरफ से दान-शालायें खोली गई। विशेषतः वह अपने पूर्वजन्म को याद कर मुनि महात्माओं की सेवा भक्ति करने लगा। गृहस्थधर्म को पालन करते हुए कुछ समय बाद मलयासुन्दरी ने अपने कुल की धुरा को धारण करनेवाले एक सद्गुणी पुत्र को जन्म दिया। जन्मोत्सव पूर्वक राजा महाबल ने उस दूसरे पुत्रका नाम सहस्रबल रक्खा।

संसार के प्रपंच में और पाँचों इन्द्रियों के विषय सुख में दिन, महीने या अनेक वर्ष बीत जाने पर भी मनुष्यों को कुछ मालूम नहीं होते। अनादि कालके लम्बे अभ्यास के कारण निरोगी आयुष्य और इष्ट संयोग की प्राप्ति मनुष्य को विशेष रुचिकर होती है। पूर्व जन्मान्तरों की तरफ आकर्षित होता रहता है। परन्तु अनादि काल से भूले हुए आत्मस्वरूप को प्राप्त करने के

लिए बिना किसी सत्पुरुषकी प्रेरणा के स्वतः प्रयत्न करने वाले भाग्यशाली कितने नजर आते है? जिस तरह भूखे मनुष्य को स्वयं ही अपना खाद्य पदार्थ प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। वैसे ही आत्मीय सुख की इच्छावाले मनुष्य को खुद धर्म की गवेषणा करनी चाहिये। परन्तु यदि पुण्योदय से बिना प्रयत्न किये ही धर्मोपदेशक का समागम मिलजाय तो उसे धर्मस्वरूप समझकर सच्चेसुखकी प्राप्ति के लिए उसे सेवन करने में जरा भी विलम्ब न करना चाहिये।

मनुष्य पर जो संकट या विपत्ति आती है वह उसे सच्चा मंनुष्य बनाती है। सच्चा मानव जीवन जीने का पाठ सिखाने के लिए ही आती है। संकट में ही मनुष्य सहनशीलता का शिक्षण प्राप्त करता है। दुःख में ही मनुष्य कर्तव्याकर्तव्यका विचार करता है। सुख में मनुष्य को कुछ भी शिक्षण नहीं मिलता इतना ही नहीं बल्कि प्रत्युक वह अपने आपको भी भूल जाता है। सांसारिक सुख एक प्रकार का नशा है, उसे कोई विरला ही झेल सकता है। इसे प्राप्त कर अपने स्वरूप का भान रखना यह साधारण बात नहीं है। बड़े-बड़े विद्वान भी इस मृगतृष्णा के लालच में पड़कर अपने कर्तव्यमार्ग से नीचे गिर जाते है, जब यह दशा है तो फिर सद्‌गुणी, सुशीला, सुन्दर स्त्री, गुणवान पुत्र और विशाल राज्यवैभव प्राप्त कर महाबल क्यों न अपने आपको भूल जाता? अपने ऐश आराम के साधन प्राप्त करते हुए भी याने सांसारिक सुख में निमग्न होकर भी उसने सुचारु राज्य व्यवस्था के कारण दूर देशों तक अपनी कीर्तिरूपी सुगन्धी फैला दी थी। जितना अच्छा हो सकता है उतना अच्छा राज्यकार्य करने में उसने कुछ भी बाकी न रक्खा था।

महाबल राज्यवैभव में पड़कर सर्वथा धर्ममार्ग से विमुख न हुआ था, किन्तु उसे जो आत्मोद्धार का परम कर्तव्य पालन करना था, उसे वह अवश्य भूल गया था। राज कार्य—और व्यवहारिक मार्ग में प्रवेश किये उसका बहुतसा समय व्यतीत हो गया था। एक दिन अर्धरात्रि के समय सुखशय्या में सोते हुए उसे एक त्यागमूर्ति दिखाई दी, जो उसे उद्देश्यकर कह रही थी—इतनी घोर निद्रा! अभी तक काल्पनिक सुख स्वप्न भंग नहीं हुआ? समय हो गया इस अमूल्य जीवन के कीमती क्षण व्यर्थ न गँवाओं, यह स्वप्नसा देखकर महाबल की निद्रा भंग हो गई। उसने सावधान हो उठकर चारों ओर देखा पर उसे कोई नजर न आया। अब वह सुने हुए शब्दों को शान्त वातावरण में तात्विक विचार करते हुए उसके हृदय में अपने परम कर्तव्य ज्ञान के सूर्योदय की एक किरण प्रकाशित हुई।

निशा विरामे परिचिन्तयामि, गेहे ज्वलिते किमहं स्वपामि

यह श्लोक याद आया। घर जल रहा है मैं किस लिए सो रहा हूँ? मैं संसार की वासनाओं में फँसकर सचमुच ही अमूल्य मानव भव के कीमती क्षण व्यर्थ गवाँ रहा हूँ। क्या संसार में इससे बढ़कर और भी सुख मिल सकता है? जिसकी आशा से मैं मृगजल को देख मृग के समान दौड़ धूप कर रहा हूँ? मैं क्यों नहीं इस तुच्छ इन्द्रियसुख लालसा के बन्धन को तोड़कर आत्मसाधना के मार्ग पर चढ़ जाऊं? मुझमें इतनी कमजोरी? अहा! मैं कितना प्रमादी हूँ? पूर्व भव में किए हुए सुकृत और दुष्कृत का अनुभव करने पर भी उस सच्चे सुख के मार्ग को न स्वीकार कर विनश्वर इन्द्रिय विषय सुख में लुब्ध हो रहा हूँ? बस अब ऐसा न होगा। अब मुझे यह संसार डरावना लगता है। पिता! ओ प्यारे पूज्य पिता! आप धन्य हो! इस तृष्णामय संसार को त्याग कर परम शान्ति के मार्ग में गमनकर अपनी आत्मा का कल्याण करने वाले पिता! आप धन्य हो। हे पूज्यनीय वीरधबल राजर्षि ! आप धन्य हैं! मैं भी अब उसी मार्ग का आश्रय लूंगा अवश्य लूँगा। मेरी निद्राभंग हो गई है। हे तेजोमय त्यागमूर्ति! आपने दर्शन देकर मुझे कीचड़ में से खींच लिया।

पूर्वोक्त बिरक्त विचारों में ही रात बीत गई। प्रातःकाल होने पर सुखशय्या से उठकर आवश्यकादि षटकर्म से निपट कर वैराग्यरस पूर्ण हृदय से वह राजसभा में आया। मनुष्य की प्रबल इच्छाशक्ति भी जादू का काम करता है। थोड़ी ही देर के बाद राजसभा में से एक वनमाली ने आकर विनम्र भाव से कहा-महाराज! सरकारी बगीचे में ज्ञानादिवाकर और तेजोमय त्यागमूर्ति कोई एक महात्मा पुरुष पधारे हैं। यह सुनकर महाबल के हर्ष का पार न रहा। अपने मनोभाव को सिद्ध करनेवाले महापुरुष का समागम सुनकर वह विकसित हो उठा। सचमुच ही मैं पुण्यवान् हूँ मेरे विचार के साथ ही ज्ञानीगुरु महाराज का समागम हो गया। बस यही मेरे समुन्नत भविष्य की निशानी है। इच्छा होते ही साधक को उत्तर साधकसहायक की प्राप्ति होना यही कार्य-सिद्धि की सूचना है, यह विचार करते हुए राजा प्रसन्न-चित्त हो सिंहासन से नीचे उतरा। उत्तरासन करके जिस दिशा में शहर से बाहर महात्मा ठहरे हुए हैं उस दिशा की ओर पांच-सात कदम चलकर जमीन पर मस्तक लगा पँचाँग नमस्कार किया। गुरुमहाराज के समागम की खबर लानेवाले वनमाली को प्रीति-दान देकर विदा किया। फिर तुरन्त ही राजसभा बर्खास्त कर राजा गुरु महाराज के वन्दनार्थ जाने की तैयारी करने लगा। देर ही क्या थी, तुरन्त ही सर्व तैयारी होने पर तमाम राजकुल के साथ भाव पूर्वक

नमस्कार कर धर्मोपदेश सुनने के इरादे से गुरुमहाराज के सन्मुख बैठ कर धर्म देशना सुनी।

दीक्षा उपसर्ग और निर्वाण

गुरु महाराज के मुख से धर्मदेशना सुनकर राजामहाबल आत्मसाधन करने के लिए सावधान हो गया। पुण्योदय के कारण प्रथम से ही उसके अन्दर आत्म-जागृति पैदा हो गई थी। धर्मदेशना से उसका पूरापोषण हो गया। धर्मोपदेश समाप्त होने पर वह सपरिवार नगर में आ गया। उसने शतबल, सहस्रबल और मलयासुन्दरी को बुलाकर उनके समक्ष अपनी संयम अंगीकार करने की भावना व्यक्त की। जब से अपना पूर्वभव बृत्तान्त सुना था मलया सुन्दरी तो तब से ही संसार से विरक्त थी। वह सिर्फ पति की इच्छा के आधीन होकर इतने समय तक गृहवास में रह रही थी। महाबल के विचार सुनकर उसके उत्साह में और भी वृद्धि हुई। संसारिक स्नेह बन्धनों को तोड़ कर वह पति के साथ ही संयम ग्रहण करने को तैयार हो गई।

सागरतिलक की राजधानी प्रथम से ही शतबल को सौंप दी गई थी। अब पृथिवीस्थानपुर की राजगद्दी पर सहस्र बल को बिठाया गया। नवीन राजों सहस्रबल और शतबल ने माता-पिता के संयम ग्रहण करने के अवसर पर नगर में बड़े समारोह से अष्टान्हिक महोत्सव किया। महाबल के साथ अनेक राजपुरुषों और मलयासुन्दरी के साथ अनेक राजकुल की स्त्रियों ने संयम अंगीकार किया। दीक्षा ग्रहण करने पर संयम-शिक्षण के लिए मलयासुन्दरी आदि को सपरिवार महत्तरा साध्वी को सौंप दी गई।

राजर्षि महाबल संयमोचित शिक्षण ग्रहण करते हुए कुछ दिन पृथ्वीस्थानपुर में बिराज कर गुरु महाराज के साथ अन्यत्र विहार कर गये। साध्वी-मलयासुन्दरी भी अपनी गुरु महत्तरा साध्वी के साथ अन्यत्र बिहार कर गईं।

अब वे दोनों जुदे-जुदे स्थलों में विचर कर ज्ञान ध्यान से अपनी आत्मा को कृतार्थ करते हैं। कभी-कभी विचरते हुए सागरतिलक और पृथ्वीस्थानपुर में आकर दोनों पुत्रों को धर्म मार्ग में प्रेरित करते और आत्मगुण-घातक व्यसनों से दूर रहने का उपदेश देते थे। वे दोनों भाई भी परस्पर प्रीति-परायण होकर सद्गुरु के उपदेश से धर्मध्यान में एवं अपनी-अपनी प्रजा को हरएक प्रकार से सुखी बनाने में सावधान रहते थे। माता-पिता की धर्म-प्रेरणा से वे दोनों राजा धर्म में इतने दृढ़ हो गये कि दूसरे मनुष्यों को भी धर्म-मार्ग में जुड़ने की प्रेरणा मिली।

तलवार की धार के समान तीव्र–तपाचरण करते हुए राजर्षि महाबल क्रम से सिद्धान्त के परगामी हो गीतार्थ हो गये। आत्मोद्धार के लिए महान प्रयत्नशील महामुनि महाबल को गीतार्थ होने के कारण अकेले बिचरने की भी गुरु महाराज ने आज्ञा दे दी। अपने क्लिष्ट कर्मनाश करने के लिए उन्होंने भी समुदाय से स्वतंत्र विचरना पसन्द किया अब वह महातपस्वी अपने साधुसमूह से पृथक होकर जंगलों श्मशानों, पहाड़ो और गिरिकंदराओं में निवास कर घोर तपके द्वारा आत्मा का उद्धार करने लगे।

अपनी मनोवृत्ति को दमन करते हुए इन महामुनि ने आत्मधर्म में मेरु-पर्वत के समान निश्चलता प्राप्त की उपसर्गों को सहन करने में पृथ्वी के समान सहनशीलता प्राप्त की थी। अपने श्रमण धर्म में स्थिर रहने के लिए उन्हें आकाश के समान किसी आलम्बन की आवश्यकता न थी। उनकी मुख मुद्रा चँद्र के समान सौम्य थी। उनका पवित्र हृदय समुद्र के समान गम्भीर था। वे वैराग्य रस में लीन होकर आत्मध्यान द्वारा कर्मशत्रुओं को निर्मूल करने में निरन्तर सावधान रहते थे। अपने और पराये के लिये उन महात्मा के हृदय में द्वेषभाव न रहा गया था। एक दिन विहार करते हुए सन्ध्या के समय परम त्याग की मूर्ति वह महामना महाबल महामुनि सागरतिलक नगर के समीप बाह्योद्यान में आ पहुँचे। अपने क्लिष्ट कर्मरुप शत्रुओं पर विजय पाकर आत्मीय शुद्ध स्वरूप प्राप्त करने का ही लक्ष्यबिन्दु होने के कारण संध्या समय होने से वे वहाँ पर ही एक राजकीय बगीचे के पास कायोत्सर्ग ध्यान मुद्रा में ध्यानस्थ हो खड़े हो गये।

इस खुश खबर को सुनकर राजा शतबल के हर्ष का पार न रहा। उसने अपने पूज्य पिता और धर्म गुरु का समागम समाचार देनेवाले उस बन-माली को बहुत सा प्रीत-दान देकर विदा किया। राजा ने विचार किया इस वक्त सन्ध्या समय हो गया। रात्रि का प्रारम्भ होने आया है, इसलिए प्रातःकाल में ही सर्व परिवार के साथ जाकर पूज्य पिता श्री गुरु महाराज को वन्दन करूँगा। सचमुच ही मैं भाग्यवान हूँ, मेरे पुण्योदय से ही गुरु महाराज ने यहाँ पधार कर इस शहर को पवित्र किया है। इस तरह बोलते हुए राजा ने उस दिशा की ओर जहां त्याग–मूर्त्ति महाबल राजर्ष ध्यान में खड़े थे ७-८ कदम चलकर जमीन पर मस्तक लगाकर पंचाँग नमस्कार किया। सुबह होने पर पूज्य पिताजी के दर्शन होंगे! उनके मुखारविन्द से धर्मोपदेश सुनूँगा और उनके उपदेशानुसार चलने का भरसक प्रयत्न करूंगा। इन्हीं विचारों की उत्सुकता में राजा ने बड़े कष्ट से रात बिताई।

मलयासुन्दरी को राक्षसी का कलंक दिए बाद सन्दूक में से बाहर निकाल कर महाबल राजा ने कनकवती की ताड़ना तर्जना कर उसे देश निकाले की शिक्षा दी थी। स्त्री जाति होने के कारण उसे प्राण दंड की शिक्षा नहीं दी गई थी। अब वह अपने दुष्कर्मों से प्रेरित हो देश-देशावरों में भटकती हुई दुःखित अवस्था में आज ही कहीं से सागर तिलक शहर में आ पहुँची है। इसी कार्य प्रसंग से वह सन्ध्या समय से शहर से बाहर उसी प्रदेश में गई जहाँ पर महातपस्वी राजर्षि महाबल ध्यान लगाये खड़े थे। मुनि महाबल को देखते ही उसने पहचान लिया। अब वह दुष्ट-हृदया स्त्री मन में विचारने लगी यह क्या? यह तो सूरपाल राजा का राजकुमार महाबल मालूम होता है, क्या यह साधु बन गया है? यह तो मेरे तमाम दुराचरणों को जानना है। यदि इसने मेरे जीवन की घटनायें यहाँ पर किसी के सामने प्रगट कर दीं तो इस शहर में भी मेरी दाल गलनी मुश्किल हो जायेगी। फिर तो मुझे यहाँ रहने तक को स्थान भी न मिलेगा। लोग तिस्कार पूर्वक मुझे शहर से बाहर निकाल देंगे। सच कहा है पापा सर्वत्र शंकिताः पापी प्राणी सब जगह अपने पाप से शंकाशील ही रहता ; मुझे इस वक्त कोई ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे मेरे दुश्चरित्र किसी को भी मालूम न हो सकें। इसी प्रकार के विचार करती हुई और वहां पर चारों ओर गौर से देखती हुई वह वापिस शहर में चली गई।

करीब डेढ़ प्रहर रात बीत चुकी है। चारों ओर घोर अन्धकार छाया हुआ है। सारा शहर निद्रादेवी की गोद में पड़ा सो रहा है, इसी कारण शहर भर में सन्नाटा छा रहा है। रास्ते सुनसान पड़े हैं। ऐसे मानव संचार रहित समय में एक स्त्री इधर उधर देखती हुई हाथ में एक जलती हुई लकड़ी लिए शहर से बाहर निकल कर उसी शून्य जंगल की तरफ जा रही है जिधर त्याग मूर्ति राजर्षि महाबल आत्मध्यान में लीन हो खड़े हैं। सचमुच ही इस समय परम संवेग रस में निमग्न हो आत्म स्वरूप के चिंतन द्वारा यह धर्म-मूर्ति महामुनि संसार में जन्म मरण पैदा करानेवाले अपने कठिन कर्मों को नाश करने में तल्लीन हो रहा था। ठीक, इसी समय वह स्त्री उस महामुनि के समीप आ पहुँची। दैवयोग से हमेशा वहाँ पर रहनेवाला बगीचे का माली भी आज किसी कार्यवश शहर में ही रह गया था, अतः उस भूमि भाग को जन संचार रहित देख कर वह स्त्री बड़ी प्रसन्न हुई।

पाठक महाशय! भ्रान्ति में न पड़ें। यह अन्य कोई नहीं, आपकी पूर्व परिचिता और महाबल मुनि की पूर्व भवकी बैरन कनकवती ही है। आज ऐसी अवस्था में इसे महाबल से बदला लेने का सूझा है।

उसी प्रदेश में किसी मनुष्य ने कोयले के लिए बहुत सी लकड़ियाँ डाल रक्खी थीं। उस दुष्टा स्त्री ने अपने पाप कर्म की सिद्धि में उन लकड़ियों का उपयोग कर लिया। घोर अन्धकारवाली रात्रि में उस वक्त वहाँ पर अपना ही राज्य समझ कर कनकवती ने उन लकड़ियों को उठा-उठा कर ध्यानस्थ खड़े हुए मुनिराज के चारों ओर चुन दिया। लकड़ियां बहुत पड़ी थी अतः पैर से लेकर सिर तक लकड़ियों का खूब ढेर लगा दिया जिससे कहीं से भी उसका शरीर मालूम न दे सके।

मुनि को चारों तरफ से लकड़ियों द्वारा वेष्टित कर कनकवती ने चारों गति के अनेक प्रकार के दुःखों से अपनी आत्मा को वेष्टित कर लिया। जन्मान्तर के वैरानुबन्ध से निर्दय हो उसने उस जीवित चिता के चारों तरफ अग्नि जलादी। मानो कनकवती के पुण्य संचय को जड़ से ही भस्मीभूत करता हो इस प्रकार अग्नि काष्ट में प्रदीप्त हो गया। आत्म ध्यान में सावधान खड़े हुए महामुनि ने अपने पर मरणान्त उपसर्ग आया देख कर मनः साक्षी आराधना करली। अब वह दुःसह वेदनायें सहन करता हुआ अपने आपको बोध देने लगा।

सचमुच ऐसे समय ही आत्मा और देह की भिन्नता का स्पष्ट ज्ञान मालूम होता है। ज्ञानवान मनुष्य की सच्ची परीक्षा ऐसे ही अवसर पर हुआ करती है। ऐसे ही वक्त पर स्वभाव में स्थित रहने से कठिन कर्म नाश होते हैं अपने सच्चे बल की परीक्षा देने का सुअवसर भी ज्ञानवान महापुरुषों को अपने जीवन में कदाचित ही प्राप्त होता है।

अपने चारों ओर लकड़ियाँ चिन दी है किसने और किस लिए ऐसा किया? इसका परिणाम क्या होगा? अब अग्नि शरीर तक पहुँचनेवाली है और इससे मैं जीवित ही जल मरूँगा, इन तमाम बातों से महामुनि महाबल अज्ञात नं था। उसने प्रथम से ही केवल ज्ञानधारी गुरु महाराज के मुख से सुना हुआ था कि एक दफा कनकवती महाबल को फिर दुःसह उपसर्ग करेगी। एवं महाबल मुनि स्वयं भी इस समय उसे अपनी नजर से देख रहा था। यदि वह इस संकट से बचना चाहता तो खुशी से बच सकता था। इतना ही नहीं किन्तु यदि वह अपने पर अत्याचार करने वाली कनकवती को शिक्षा देना चाहता तो यह सामर्थ्य भी उसमें था ही। इस शहर का राजा भी उसी का पुत्र और परम भक्त था। यह सब कुछ होने पर भी उस महामुनि ने मरणान्त कष्ट क्यों सहन किया होगा? यह बात साधारण पाठक के मनमें आश्चर्य पैदा करने वाली है। जिस ज्ञानवान त्यागी मुनि ने अपने शरीर के ममत्व को भी त्याग

दिया। जिसे किसी भी प्रकार की शारीरिक मूर्च्छा नहीं है वह संसार के कारागृह से मुक्त होकर सदानन्द देनेवाले आत्मस्वरूप की प्राप्ति के मार्ग में रोड़ा अटकानेवाले शरीर ममत्व को सामने क्यों आने देगा?

ऐसे प्रसंग पर जिस जागृति की आवश्यकता होती है, वह उस महापुरुष में प्रथम से ही थी। अब वह मानसिक वृत्ति को आत्म स्वभाव में स्थिति रखने के लिए स्वयं ही समभाव में दृढ़ होने लगा। आत्मा! तू जिस देह मंदिर में रहा हुआ है वह तुझसे जुदा है उसके जल जाने पर तुझे जराभी आँच न आयेगी। क्योंकि तू अमर है और अरुपी है। यह अग्नि तेरे पूर्व संचित कर्म मल को जलाकर तुझे विशुद्धि करता है।

इत्यादि प्रबल विशुद्ध भावना बलसे कनकवती पर द्वेष और शरीर पर ममत्वभाव पैदा न होने देकर समभावकी सरल श्रेणी से वह महात्मा आगे बढ़ा। एकत्व भावना में लीन होने के कारण उसके शुभाशुभ कर्म और देह ममत्वका भाव सर्वथा नष्ट हो गया। आत्म स्वरूप में लीन होने से धाति कर्मो का क्षय होते ही उसके हृदयाकाश में केवल ज्ञान रूप सूर्य का उदय हो गया। ज्यों वह अग्नि जल रही थी। त्यों अन्तर अग्नि शुक्लध्यान प्रज्वलित हो रहा था। इस शुक्ल ध्यानरूप अन्तर अग्निने देह भस्म होने के पहले ही शेष रहे हुए अघाति कर्मों को भी भस्मीभूत कर डाला। बस अब वह सर्वकर्मों का नाश होने से कृतकार्य हो सदा के लिये जन्म जरा मरण से मुक्त होकर शाश्वत अविनाशी निर्वाण पद को प्राप्त हो गया। धन्य है ऐसी पवित्रात्त्माओं को।

यह महापुरुषों का अटल उपदेश है कि जो शुभ कार्यफल करने का विचार हो उसे आजही कर लो और जो आज करना है उसे अभी करो। श्रेष्ठ विचार आने पर उसे आचार में लाने के लिए बिलम्ब मत करो। शुभ कार्यों में बिलम्ब करने से उसमें विघ्नबाधा पड़ते देर नहीं लगती यदि किसी कारण मन में बुरे विचार पैदा हुए है तो उन्हें आचार में लाने की शीघ्रता मत करो बिलम्ब करने से मनुष्य बुरे कर्म से बच सकता है। परन्तु शुभ विचार को आचार में लाने के आलस्य या बिलम्ब करने से मनुष्य को किसी समय महान पश्चाताप करना पड़ता है।

प्रातःकाल होते ही उत्सुकतापूर्वक सकल परिवार को साथ लेकर शतबल राजा अपने पूज्य पिता और धर्म गुरु को बन्दनार्थ उद्यान में आया। परन्तु वहाँ पर महामुनि को कहीं पर भी देख न बनमाली के बतलाये मुजब जहाँ पर वह महामुनि कल सन्ध्या समय ध्यानस्थ हो खड़ा था इस वक्त वहाँ

पर राख का ढेर लगा पड़ा है। उस राख को देखने से मालूम हुआ कि उसमें किसी मनुष्य को जलाया गया है। खूब बारीकाई से तलाश करने पर यह साबित हो गया है कि किसी दुष्ट ने उस महामुनि को ही जला दिया है। यह दुःखद समाचार सुनते ही धर्मप्रेमी पितृभक्त शतबल राजा अकस्मात् मूर्च्छा पाकर जमीन पर गिर पड़ा यह देख मंत्री सामन्तों के भी दुःख का पार न रहा। शीतोपचार करने पर राजा होंश में आया और पश्चात्ताप करते हुए बोल उठा —अरे! भव भ्रमण से निर्भिक हो इस महामुनि को ऐसा घोर उपसर्ग किस दुष्टात्माने किया है? राख के पुंजपर दृष्टि पड़ने से पिता भक्त कोमल हृदय शतबल को फिर से मूर्च्छा ने दबा लिया कुछ देर बाद सुध आनेपर वह मुक्तकंठ से विलाप करने लगा।

हा! हताश! शतबल। तू इतना अभागा है! समीप आये हुए दुर्लभ पिता के चरण कमलों में नमस्कार तक भी न कर सका! इतना प्रमाद! हे पूर्ज्यपिता? आपकी करुणा पूर्ण पवित्रदृष्टि मुझ अभागे पर न पड़ सकी। मैं अभाग्यशेखर आपकी अमृतमय उपदेशवाणी भी न सुन सका! एक दलिद्र मनुष्य के समान मेरे मनोरथ मन में ही विलीन हो गये! हा! मेरे ही राज्य में धर्ममूर्ति पिताश्री की यह दशा!! यदि मैं संध्या समय ही यहाँ आया होता तो मुझे कल ही सब तरह का लाभ प्राप्त हो जाता। परन्तु धिक्कार है मेरे प्रमादी जीवन को!

इस प्रकार दुःख मनाते हुए राजा ने राजपुरुषों को आज्ञा दी सुभटों! जाओ उस दुष्टात्मा के पदचिन्ह देख कर उसे जीवित को ही मेरे पास ले जाओ।

राजा की आज्ञा होते ही अनेक राजसुभट चारों ओर दौड़ पड़े। पदचिन्ह पहचानने वाले राजपुरुष उस स्त्री के पदचिन्ह अनुसार धीरे धीरे शहर से बाहर एक खँडहर पड़े हुए मठके पास जा पहुँचे। बस वहां पर ही वह पापात्मा कनकवती छिपकर बैठी थी। राजपुरुषों ने उसे बांध लिया और राजा के पास ला खड़ी की। राजा ने ताड़ना तर्जना द्वारा मुनिराज को भस्म करने का कारण पूछा उसने अपना किया हुआ तमाम अकृत्य बतला दिया। राजा ने सुभटों के द्वारा अनेक प्रकार की मारसे उसे जानसे मरवा डाली।। उसने अपने किये दुष्ट कर्मों के अनुसार ही फल पाया। वह मृत्यु पाकर छठी नरक में नारकतया उत्पन्न हुई।

अपराधी को दण्ड देने पर भी राजा शतबल का शोक दूर न हुआ। उसके हृदय का कारी घाव न भरा। गुरु और पिता की त्रुटि पूरी न हुई। प्रधान पुरुषों के समझाने पर भी उसके हृदयाकाश से शोक के बादल नष्ट न हुए।

इधर यह समाचार पृथ्वीस्थानपुर में पहुँचने पर राजा सहस्त्रबल के भी शोक का पार न रहा। उसके आनन्द में निरानन्द छा गया। दोनों राजाओं ने पिता के शोकसागर में निमग्न होकर अपने तमाम प्रकार के सुखों का त्याग कर दिया। अब रात दिन उनके सामने पिता के गुण और उनकी वह विषम मृत्यु देख पड़ती है, इससे राज्य का सर्व कार्य शिथिल होने लगा।

सा० मलयासुन्दरी का उपदेश

इधर साध्वी मलयासुन्दरी ने निर्मल चारित्र पालन करते हुए ज्ञानाभ्यास में आगे बढ़कर क्रम से ग्यारह अंग का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उसने तत्त्वज्ञान में गहरा प्रवेश कर लिया था। ज्ञानोपार्जन के साथ वह तीव्र तप भी करती थी। ज्यों क्लिष्ट कर्मों को क्षय करने में वह रातदिन सावधान रहती थी त्यों नये कर्मबन्ध से भी बचने में बड़ी सावचेत रहती थी। क्योंकि कर्मों के भयंकर परिणाम का अनुभव उसने इसी भव में किया हुआ था। अभी तक उन दुःख के दिनों को भूल न गई थी।

निरन्तर ज्ञानध्यान में प्रयत्न करते हुए उस महासती को अवधिज्ञान की प्राप्ति हुई। गुरूमहाराज ने उसकी उच्च दकर ुसे महत्तरा की (प्रवर्तनी) पदवी से विभूषित किया था। अवधिज्ञान के प्रकाश से वह मनुष्यों के दुःख दूर कर उन्हें सद्बोध देकर धर्म मार्ग में प्रेरित करती थी। इस ज्ञान के प्रकाश से एक दिन उसने महामुनि महाबल का हुआ देखा। शतबल को पितृ शोकसागर में निमग्न देख उसका उद्धार करने की भावना से महत्तरा मलयासुन्दरी अनेक साध्वी समुदाय के साथ विहार कर सागरतिलक शहर में पधारी।

अपनी माता महत्तरा मलयासुन्दरी का आगमन सुन कर राजा शतबल को बड़ी खुशी हुई। समाचार मिलते ही वह सपरिवार तत्काल महत्तरा को वन्दना करने आया। नमस्कार कर वह धर्म शिक्षा ग्रहण करने की इच्छा से परिवार सहित उचित स्थान पर बैठ गया।

अमृत के समान मधुर वचनों द्वारा प्रसन्न मुख से साध्वी मलयासुन्दरी ने शरीर की क्षणभंगुरता और आयुष्य की अल्पता के विषय में उपदेश दिया तथा अपने पुत्रों को सद कर्म करने की प्रेरणा दी।

-----✸-----

तित्थयर वर्ष २५
अप्रैल २००१ से सितम्बर २००१

निबन्ध

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	जैन दर्शन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण	मुनि श्री सुशील कुमार	७
२.	जैनधर्म व अहिंसा	स्व. पूरणचन्द सामसुखा	१७
३.	जैन चित्रकला		२२
४	जैन वाङ्मय और उसका क्रमिक विकास	श्री मदन कुमार मेहता	३३
५.	पार्श्वनाथ जन्मभूमि मंदिर, वाराणसी का पुरातत्त्वीय वैभव	प्रो० सागरमल जैन	४०
६.	भारतीय जीवन-महानद के दो किनारे	स्व० श्री सत्यदेव विद्यालंकार	५०
७.	महाकवि इलंगो अडिगल कृत प्राचीन तमिल महाकाव्य सिलप्पदिकारम्	डॉ. रमणलाल ची. शाह	५९
८.	ज्योतिष के प्राचीनतमत्व पर संक्षिप्त विवेचन	वैद्य प्रकाशचन्द्र पांड्या	७८
९.	गौड़ी पार्श्वनाथ तीर्थ और पाकिस्तान व बंगला देश के जिनालय	श्री भँवरलाल नाहटा	९५
१०.	जैन कथा - साहित्य	श्री फूलचन्द्र जैन सारंग	१०२
११.	प्राचीन जैन सिक्कों का अध्ययन	डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री	११३
१२.	वत्सराज उदयन और उसका कौटुंबिक इतिहास	श्री नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी	१२६
१३.	महातापस गोम्मटेश्वर बाहुबली	डॉ. यु. पी. शाह	१४२
१४.	अनेकान्तवाद और विश्वदर्शन समन्वय	उपाध्याय श्री अमरमुनि	१५४
१५.	ग्रहस्थ जीवन का जैन दर्शन	डॉ. ज्योति प्रसाद जैन	१६८
१६.	देवाबि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो	श्रीमती गायत्री कल्याण कांकरिया	१७८
१७.	अकबर और जैनधर्म	श्री कृष्णलाल वर्मा	१८४
१८.	सम्राट सम्प्रति और उसकी कृतियाँ	डॉ० नेमीचन्द्र शास्त्री	१९७
१९.	कुछ विदेशी लेखकों की दृष्टि में जैन धर्म एवं भगवान् महावीर	श्री महेन्द्र राजा	२०९
२०.	जैन दर्शन में काय विचार : दार्शनिक विवेचन	डॉ. मुकुल्राज मेहता	२२४
२१.	जैन विज्ञान	डॉ० हरिसत्य भट्टाचार्य	२२८
२२.	दर्शन और विज्ञान में आत्मा	उदय नागोरी जैन	२४९
२३.	युग-युग की जैन महिला चेतना	श्रीमती लता बोथरा	२६२
२४.	भारतीय राजनीति में जैन धर्म का योगदान	लक्ष्मी नाहटा	२७२
२५.	जैनों का सामाजिक इतिहास	डॉ० व्लिास ए० संगवे	२८०
२६.	जैन वैधक शास्त्र	आयुर्वेद भूषण-श्री कन्हैयालाल जैन	२८९

तित्थयर वर्ष २५
अक्टूबर २००१ से मार्च २००२

निबन्ध

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	पल्लव और कदम्ब राजवंश	श्री कामता प्रसाद जैन	३२३,३७१,४१९
२.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनिजी	३३१,३८५,४२४ ४७४,५२४,५७३
३.	उद्योग प्रबन्धन का आधार महावीर दर्शन	श्रीमती लता बोथरा	४६७
४.	चन्देरी	श्री चम्पालाल सिंघई	५१५
५.	जैन दर्शन नास्तिक नहीं	डॉ. मंगलदेव शास्त्री	५१९
६.	भगवान् महावीर पर मांसाहार के आरोप का प्रतिवाद (खंडन)	श्री नेमीचन्द बाँठिया	५७३
७.	मलयासुन्दरी	कथानक	३३६,३८८,४३७ ४८८,५३३,५७५
८.	प्रयात तुम्हें शत-शत प्रणाम	श्रीमती लता बोथरा	५६३

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-355-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 464-2783

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (Resi) 352-8387/[illegible]885

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax:.(033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Kolkata - 700 068
Ph: 472-0610

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street Kolkata - 700 001,
Ph: 235 2759 Fax: 033-252902

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

DHARAM CHAND SARAOGI
'Jain House' 8/1 Esplanade East
Kolkata - 700 069

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHREE SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and cables
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110 043, Ph: (O) 501-6527
(Resi) 545-3415, 542-3304
Mobile: 9811075330

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

H. R. ELECTRONICS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street, 1st Floor, Kolkata - 700 001
Phone : 235 7312, (Shop) 230 1180 (Resi) : 241 6831

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

S. VINAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Kolkata - Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Kolkata - 700 073

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अangan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Ph : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:
226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkáta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short
Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITH NATURE

Head Office: 113 Park Street. 3rd floor. South Block. Calcutta-700016 Ph:(033)245-7562. Registered Office: Subhash House. F-27 2 Okhla Industrial area. Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8 2 Lisor Road. Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metre, no less.

Building a floating pumping station on the fierce of Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproff Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला

१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़

कोलकाता – ७०० ००७

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीस पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

卐

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेटी

कोलकाता

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti/ Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Bandyopadhyay Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1 Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi

******

We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)

******

Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE: SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Tech/W.B./R.N.P.-45
Vol. XXV No. 12 TITTHAYARA March 2002
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225